

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये किङ्किङ्काकाण्डे

॥ चतुर्दशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ चतुर्दशः सर्गः ॥

रालिनो रधाय श्रीरामस्याश्रासनं प्राप्य सुग्रीरस्य घोरं गर्जनम्

सर्वे ते वररितं गंरा किङ्किकां रालिनः पुरीम्।
बृहैरात्मानमारुत्य र्यातिष्ठन् गहने रने ॥ 4.14.1 ॥

रिसार्य सरतो दृष्टिं कानने काननप्रियः।
सुग्रीरो रिपुलग्रीरः क्रोधमाहारयद् भृशम् ॥ 4.14.2 ॥

ततस्तु निनदं घोरं कृंरा युद्धाय चाह्रयत्।
परिरारैः परिरृतो नादैर्भिन्दन्निराश्वरम् ॥ 4.14.3 ॥

गर्जन्निर महामेघो रायुरेगपुरःसरः।
अथ बालार्कसदृशो दृप्तसिंहगतिस्ततः ॥ 4.14.4 ॥

दृष्ट्वा रामं क्रियादम्भं सुग्रीरो राक्यमब्रवीत्।
हरिरागुरया र्याप्तां तप्तकाञ्चनतोरणाम् ॥ 4.14.5 ॥

प्राप्ताः स्म ध्रजयज्जात्यां किङ्किकां रालिनः पुरीम्।
प्रतिष्ठा या कृता रीर वरया रालिरधे पुरा ॥ 4.14.6 ॥

सफलां कुरु तां स्फिप्रं लतां काल इरागतः।
एरमुक्तस्तु धर्मात्मा सुग्रीरेण स राघरः ॥ 4.14.7 ॥

তমেরোরাচ রচনং সুগ্রীরং শক্রসূদনঃ।
কৃতাভিজ্ঞানচিহ্নস্তুমনযা গজসাহরযা ॥ 4.14.8 ॥

লক্ষ্মণেন সমুৎপাট্য এষা কণ্ঠে কৃতা তর।
শোভসেহপ্যধিকং রীর লতযা কণ্ঠসক্তযা ॥ 4.14.9 ॥

রিপরীত ইরাকাশে সূর্যো নক্ষত্রমালযা।
অদ্য রালিসমুখং তে ভযং রৈরং চ রানর ॥ 4.14.10 ॥

একেনাহং প্রমোক্ষ্যামি বাণমোক্ষেণ সংযুগে।
মম দর্শয সুগ্রীর রৈরিণং ভ্রাতৃরূপিণম্ ॥ 4.14.11 ॥

রালী রিনিহতো যারদ্বনে পাংসুষু চেষ্টতে।
যদি দৃষ্টিপথং প্রাপ্তো জীরন্ স রিনিরর্ততে ॥ 4.14.12 ॥

ততো দোষেণ মা গচ্ছেৎ সদ্যো গর্হেচ্চ মাং ভরান্।
প্রত্যক্ষং সপ্ত তে সালা মযা বাণেন দারিতাঃ ॥ 4.14.13 ॥

তেনারেহি বলেনাদ্য রালিনং নিহতং রণে।
অনৃতং নোক্তপূরং মে চিরং কৃচ্ছেহপি তিষ্ঠতা ॥ 4.14.14 ॥

ধর্মলোভপরীতেন ন চ রক্ষ্যে কথঞ্চন।
সফলাং চ করিষ্যামি প্রতিজ্ঞাং জাহি সদ্ভ্রমম্ ॥ 4.14.15 ॥

প্রসূতং কলমক্ষেত্রং রর্ষণের শতক্রতুঃ।
তদাহরাননিমিত্তং চ রালিনো হেমমালিনঃ ॥ 4.14.16 ॥

সুগ্রীর কুরু তং শব্দং নিষ্পতেদ্ যেন রানরঃ।
জিতকাশী জযশ্লাঘী ত্রযা চাধর্ষিতঃ পুরাৎ ॥ 4.14.17 ॥

নিষ্পতিষ্যত্যসঙ্গেন রালী স প্রিযসংযুগঃ।
রিপুণাং ধর্ষিতং শ্রুৎরা মর্ষযন্তি ন সংযুগে ॥ 4.14.18 ॥

জানন্তস্ত স্বকং বীর্যং স্ত্রীসমক্ষং বিশেষতঃ।
স তু রামরচঃ শ্ৰুৎৱা সুগ্রীরো হেমপিঙ্গলঃ ॥ 4.14.19 ॥

ননর্দ ক্রুরনাদেন বিনির্ভিন্দন্নিসাম্বরম্।
তত্র শব্দেন বিত্রস্তা গারো যান্তি হতপ্রভাঃ ॥ 4.14.20 ॥

রাজদোষপরামৃষ্টাঃ কুলস্ত্রিয় ইরাকুলাঃ।
দ্রবন্তি চ মৃগাঃ শীঘ্রং ভগ্না ইর রণে হযাঃ।
পতন্তি চ খগা ভূমৌ ক্ষীণপুণ্যা ইর গ্রহাঃ ॥ 4.14.21 ॥

ততঃ স জীমূতকৃতপ্রণাদো
নাদং হুমুঞ্চৎ ৎৱরযা প্রতীতঃ।
সূর্যাত্মজঃ শৌর্যবিরুদ্ধতেজাঃ
সরিৎপতির্রানিলচঞ্চলোর্মিঃ ॥ 4.14.22 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে ৱাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে
কিঙ্কিকাণ্ডে চতুর্দশঃ সর্গঃ ॥